''मीठे बच्चे – तुम्हारे मोह की रगें अब टूट जानी चाहिए क्योंकि यह सारी दुनिया विनाश होनी है, इस पुरानी दुनिया की किसी भी चीज़ में रूचि न हो''

प्रश्नः- जिन बच्चों को रूहानी मस्ती चढ़ी रहती है, उनका टाइटिल क्या होगा? मस्ती किन बच्चों को चढ़ती है?

उत्तरः- रूहानी मस्ती में रहने वाले बच्चों को कहा जाता है – 'मस्त कलंधर', वही कलंगीधर बनते हैं। उन्हें राजाईपने की मस्ती चढ़ी रहती है। बुद्धि में रहता–अभी हम फ़कीर से अमीर बनते हैं। मस्ती उन्हें चढ़ती जो रूद्र माला में पिरोने वाले हैं। नशा उन बच्चों को रहता है जिन्हें निश्चय है कि हमें अब घर जाना है फिर नई दुनिया में आना है।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से रूहरिहान कर रहे हैं। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान रूहों प्रति। रूह है ज्ञान का सागर। मनुष्य कभी ज्ञान का सागर नहीं हो सकते। मनुष्य हैं भक्ति के सागर। हैं तो सभी मनुष्य। जो ब्राह्मण बनते हैं वह ज्ञान सागर से ज्ञान लेकर मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हैं। फिर देवताओं में न भक्ति होती, न ज्ञान होता। देवतायें यह ज्ञान नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक ही परमपिता परमात्मा है इसलिए उनको ही हीरे जैसा कहेंगे। वही आकर कौड़ी से हीरा, पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। देवता ही फिर आकर मनुष्य बनते हैं। देवतायें बने श्रीमत से। आधाकल्प वहाँ कोई की मत की दरकार नहीं। यहाँ तो ढेर गुरूओं की मत लेते रहते हैं। अब बाप ने समझाया है सतगुरू की श्रीमत मिलती है। खालसे लोग कहते हैं सतगुरू अकाल। उसका भी अर्थ नहीं जानते। पुकारते भी हैं सतगुरू अकालमूर्त अर्थात् सद्गति करने वाला अकालमूर्त। अकालमूर्त परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है। सतगुरू और गुरू में भी रात-दिन का फ़र्क है। तो वह ब्रह्मा का दिन और रात कह देते हैं। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात, तो जरूर कहेंगे ब्रह्मा पुनर्जन्म लेते हैं। ब्रह्मा सो यह देवता विष्णु बनते हैं। तुम शिवबाबा की महिमा करते हो। उनका हीरे जैसा जन्म है।

अभी तुम बच्चे गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पावन बनते हो। तुम्हें पवित्र बन फिर यह ज्ञान धारण करना है। कुमारियों को तो कोई बन्धन नहीं है। उन्हें सिर्फ माँ-बाप वा भाई-बहन की स्मृति रहेगी। फिर ससुरघर जाने से दो परिवार हो जाते हैं। अब बाप तुमको कहते हैं अशरीरी बन जाओ। अब तुम सबको वापिस जाना है। तुमको पवित्र बनने की युक्ति भी बताता हूँ। पतित-पावन मैं ही हूँ। मैं गैरन्टी करता हूँ तुम मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। जैसे पुराना सोना आग में डालने से उनसे खाद निकल जाती है, सच्चा सोना रह जाता है। यह भी योग अग्नि है। इस संगम पर ही बाबा यह राजयोग सिखलाते हैं, इसलिए उनकी बहुत महिमा है। राजयोग जो भगवान् ने सिखाया था वह सब सीखना चाहते हैं। विलायत से भी सन्यासी लोग बहुतों को ले आते हैं। वह समझते हैं इन्हों ने सन्यास किया है। अब सन्यासी तो तुम भी हो। परन्तु बेहद के सन्यास को कोई भी जानते नहीं। बेहद का सन्यास तो एक ही बाप सिखलाते हैं। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया ख़त्म होने वाली है। इस दुनिया की कोई चीज़ में हमारी रूचि नहीं रहती है। फलाने ने शरीर छोड़ा, जाकर दूसरा लिया पार्ट बजाने लिए, हम फिर रोयें क्यों! मोह की रग निकल जाती है। हमारा सम्बन्ध जुटा है अब नई दुनिया से। ऐसे बच्चे पक्के मस्त कलंगीधर होते हैं। तुम्हारे में राजाईपने की मस्ती है। बाबा में भी मस्ती है ना–हम यह कलंगीधर जाकर बनेंगे, फ़कीर से अमीर बनेंगे। अन्दर में मस्ती चढ़ी हुई है, इसलिए मस्त कलंधर कहते हैं। इनका तो साक्षात्कार भी करते हैं। तो जैसे इनको मस्ती चढ़ी हुई है, तुमको भी चढ़नी चाहिए। तुम भी रूद्र माला में पिरोने वाले हो। जिनको पक्का निश्चय हो जाता है उनको नशा चढ़ेगा। हम आत्माओं को अब जाना है घर। फिर नई दुनिया में आयेंगे। इस निश्चय से जो इनको भी देखते हैं तो उनको बच्चा (श्रीकृष्ण) देखने में आता है। कितना शोभनिक है। कृष्ण तो यहाँ है नहीं। उनके पिछाड़ी कितने हैरान होते हैं। झूले बनाते, उनको दूध पिलाते हैं। वह हैं जड़ चित्र, यह तो रीयल है ना। इनको भी यह निश्चय है कि हम बालक बनेंगे। तुम बच्चियाँ भी दिव्य दृष्टि में छोटा बच्चा देखती हो। इन ऑखों से तो देख न सकें। आत्मा को जब दिव्य दृष्टि मिलती है तो शरीर का भान नहीं रहता। उस समय अपने को महारानी और उनको बच्चा समझेंगे। यह साक्षात्कार भी इस समय बहुतों को होता है। सफेद पोशधारी का भी साक्षात्कार बहुतों को होता है। फिर

उनको कहते हैं तुम इनके पास जाओ, ज्ञान लो तो ऐसा प्रिन्स बनेंगे। यह जादूगरी ठहरी ना। सौदा भी बहुत अच्छा करते हैं। कौड़ी लेकर हीरा-मोती देते हैं। हीरे जैसा तुम बनते हो। तुमको शिवबाबा हीरे जैसा बनाते हैं, इसलिए बलिहारी उनकी है। मनुष्य न समझने कारण जादू-जादू कह देते हैं। जो आश्चर्यवत् भागन्ती हो जाते हैं वह जाकर उल्टा-सुल्टा सुनाते हैं। ऐसे बहुत ट्रेटर बन जाते हैं। ऐसे ट्रेटर बनने वाले ऊंच पद पा नहीं सकते। उनको कहा जाता है गुरू का निन्दक ठौर न पाये। यहाँ तो सत्य बाप है ना। यह भी अभी तुम समझते हो। मनुष्य तो कह देते वह युगे-युगे आता है। अच्छा, चार युग हैं फिर 24 अवतार कैसे कह सकते? फिर कहते ठिक्कर-भित्तर कण-कण में परमात्मा है, तो सब परमात्मा हो गये। बाप कहते हैं मैं कौड़ी से हीरा बनाने वाला, मुझे फिर ठिक्कर-भित्तर में ठोक दिया है। सर्वव्यापी है गोया सबमें है फिर तो कोई वैल्यू न रही। मेरा कैसा अपकार करते हैं। बाबा कहते यह भी ड्रामा में नूँध है। जब ऐसे बन जाते हैं तब फिर बाप आकर उपकार करते हैं अर्थात् मनुष्य को देवता बनाते हैं।

वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। सतयुग में फिर यह लक्ष्मी-नारायण ही आयेंगे। वहाँ सिर्फ भारत ही होता है। शुरू में बहुत थोड़े देवतायें होंगे फिर वृद्धि को पाते-पाते पाँच हजार वर्ष में कितने हो गये। अभी यह ज्ञान और कोई की बुद्धि में है नहीं। बाकी है भक्ति। देवताओं के चित्रों की महिमा गाते हैं। यह नहीं समझते कि यह चैतन्य में थे, फिर कहाँ गये? चित्रों की पूजा करते हैं परन्तु वह हैं कहाँ? उनको भी तमोप्रधान बन फिर सतोप्रधान बनना है। यह कोई की बुद्धि में नहीं आता। ऐसे तमोप्रधान बुद्धि को फिर सतोप्रधान बनाना बाप का ही काम है। यह लक्ष्मी-नारायण पास्ट हो गये हैं, इसलिए इन्हों की महिमा है। ऊंचे ते ऊंचा एक भगवान् ही है। बाकी तो सब पुनर्जन्म लेते रहते हैं। ऊंचे ते ऊंचा बाप ही सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। वह न आते तो और ही वर्थ नाट ए पेनी तमोप्रधान बन पड़ते। जब यह राज्य करते थे तो वर्थ पाउण्ड थे। वहाँ कोई पूजा आदि नहीं करते थे। पूज्य देवी-देवतायें ही पुजारी बन गये, वाम मार्ग में विकारी बन पड़े। यह किसको पता नहीं कि यह सम्पूर्ण निर्विकारी थे। तुम ब्राह्मणों में भी यह बातें नम्बरवार समझते हैं। खुद ही पूरा नहीं समझा होगा तो औरों को क्या समझायेगा। नाम है ब्रह्माकुमार-कुमारी, समझा न सके तो नुकसान कर देते हैं। इसलिए कहना चाहिए हम बड़ी बहन को बुलाते हैं, वह आपको समझायेंगी। भारत ही हीरे जैसा था, अब कौड़ी जैसा है। बेगर भारत को सिरताज कौन बनाये? लक्ष्मी-नारायण अब कहाँ हैं, हिसाब बताओ? बता नहीं सकेंगे। वह हैं भक्ति के सागर। वही नशा चढ़ा हुआ है। तुम हो ज्ञान सागर। वह तो शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं शास्त्रों में है भक्ति की रस्म रिवाज। जितनी तुम्हारे में ज्ञान की ताक़त भरती जायेगी तो तुम चुम्बक बन जायेंगे। तो फिर सबको कशिश होगी। अभी नहीं है। फिर भी यथा योग, यथा शक्ति जितना बाप को याद करते हैं। ऐसे नहीं, सदैव बाप को याद करते हैं। फिर तो यह शरीर भी न रहे। अभी तो बहुतों को पैगाम देना है, पैगम्बर बनना है। तुम बच्चे ही पैगम्बर बनते हो और कोई नहीं बनते। क्राइस्ट आदि आकर धर्म स्थापन करते हैं, उनको पैगम्बर नहीं कहा जायेगा। क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया और तो कुछ नहीं किया। वह किसके शरीर में आया फिर उनके पीछे दूसरे आते हैं। यहाँ तो यह राजधानी स्थापन हो रही है। आगे चल तुम सबको साक्षात्कार होगा–हम क्या-क्या बनेंगे, यह-यह हमने विकर्म किया। साक्षात्कार होने में देरी नहीं लगती। काशी कलवट खाते थे, एकदम खड़ा होकर कुएं में कूद पड़ते थे। अभी तो गवर्मेन्ट ने बन्द कराया है। वह समझते हैं हम मुक्ति को पायेंगे। बाप कहते हैं मुक्ति को तो कोई पा नहीं सकता। थोड़े टाइम में जैसे सब जन्मों का दण्ड मिल जाता है। फिर नयेसिर हिसाब-किताब शुरू होता है। वापस तो कोई जा नहीं सकते। कहाँ जाकर रहेंगे? आत्माओं का सिजरा ही बिगड़ जाये। नम्बरवार आयेंगे फिर जायेंगे। बच्चों को साक्षात्कार होता है तब यह चित्र आदि बनाते हैं। 84 जन्मों के सारे सृष्टि के चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुमको मिला है। फिर तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई बहुत मार्क्स से पास होते हैं कोई कम। सौ मार्क्स तो किसी की होती नहीं। 100 हैं ही एक बाप की। वह तो कोई बन न सके। थोड़ा-थोड़ा फ़र्क पड़ जाता है। एक जैसे भी बन न सकें। कितने ढेर मनुष्य हैं सबके फीचर्स अपने-अपने हैं। आत्मायें सभी कितनी छोटी बिन्दू हैं। मनुष्य कितने बड़े-बड़े हैं परन्तु फीचर्स एक के न मिलें दूसरे से। जितनी आत्मायें हैं, उतनी ही फिर होंगी तब तो वहाँ घर में रहेंगी। यह भी ड्रामा बना हुआ है। इसमें कुछ भी फ़र्क नहीं हो सकता। एक बार जो सूटिंग हुई वही फिर देखेंगे। तुम कहेंगे 5 हज़ार वर्ष पहले भी हम ऐसे मिले थे। एक सेकण्ड भी कम जास्ती नहीं हो सकता।

ड्रामा है ना। जिसको यह रचता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है उनको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। बाप से ही यह नॉलेज मिलती है। मनुष्य, मनुष्य को यह ज्ञान दे न सकें। भक्ति सिखलाते हैं मनुष्य, ज्ञान सिखलाता है एक बाप। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। फिर तुम ज्ञान नदियां बनती हो। ज्ञान सागर और ज्ञान नदियों से ही मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। वह तो हैं पानी की नदियां। पानी तो सदैव है ही है। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। पानी की नदियां तो भारत में बहती ही हैं, बाकी तो इतने सब शहर ख़त्म हो जाते हैं। खण्ड ही नहीं रहते। बरसात तो पड़ती होगी। पानी, पानी में जाकर पड़ता है। यही भारत होगा।

अभी तुमको सारी नॉलेज मिली है। यह है ज्ञान, बाकी है भक्ति। हीरे जैसा एक ही शिवबाबा है, जिसकी जयन्ती मनाई जाती है। पूछना चाहिए शिवबाबा ने क्या किया? वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। तब गाया जाता है ज्ञान सूर्य प्रगटा.... ज्ञान से दिन, भक्ति से रात होती है। अब तुम जानते हो हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। अब बाबा को याद करने से पावन बन जायेंगे। फिर शरीर भी पावन मिलेगा। तुम सब नम्बरवार पावन बनते हो। कितनी सहज बात है। मुख्य बात है याद की। बहुत हैं जिन्हें अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना भी नहीं आता है। फिर भी बच्चे बने हैं तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे। इस समय के पुरूषार्थ अनुसार ही राजाई स्थापन होती है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सदा इसी नशे में रहना है कि हम मास्टर ज्ञान सागर हैं, स्वयं में ज्ञान की ताकत भरकर चुम्बक बनना है, रूहानी पैगम्बर बनना है।

2) कोई ऐसा कर्म नहीं करना है जिससे सतगुरू बाप का नाम बदनाम हो। कुछ भी हो जाये लेकिन कभी भी रोना नहीं है।

वरदान:- ज्ञान के साथ गुणों को इमर्ज कर सर्वगुण सम्पन्न बनने वाले गुणमूर्त भव

हर एक में ज्ञान बहुत है, लेकिन अब आवश्यकता है गुणों को इमर्ज करने की इसलिए विशेष कर्म द्वारा गुण दाता बनो। संकल्प करो कि मुझे सदा गुणमूर्त बन सबको गुण मूर्त बनाने के कर्तव्य में तत्पर रहना है। इससे व्यर्थ देखने, सुनने वा करने की फुर्सत नहीं मिलेगी। इस विधि से स्वयं की वा सर्व की कमजोरियाँ सहज समाप्त हो जायेंगी। तो इसमें हर एक अपने को निमित्त अव्वल नम्बर समझ सर्वगुण सम्पन्न बनने और बनाने का एक्जैम्पल बनो।

स्लोगन:- मंसा द्वारा योगदान, वाचा द्वारा ज्ञान दान और कर्मणा द्वारा गुणों का दान करो।

''मीठे बच्चे – विदेही बन बाप को याद करो, स्वधर्म में टिको तो ताक़त मिलेगी, खुशी और तन्दुरूस्ती रहेगी, बैटरी फुल होती जायेगी''

प्रश्नः- ड्रामा की किस नूँध को जानने के कारण तुम बच्चे सदा अचल रहते हो?

उत्तरः- तुम जानते हो यह बाम्ब्स आदि जो बने हैं, यह छूटने हैं जरूर। विनाश होगा तब तो हमारी नई दुनिया आयेगी। यह ड्रामा की अनादि नूँध है, मरना तो सबको है। तुम्हें खुशी है कि हम यह पुराना शरीर छोड़ राजाई में जन्म लेंगे। तुम ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। इसमें हिलने की बात नहीं, रोने की कोई दरकार नहीं।

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं यह जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म था उसको हिन्दू धर्म में क्यों लाया? कारण निकालना चाहिए। पहले तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही था। फिर जब विकारी हुए तो अपने को देवता कह न सके। तो अपने को आदि सनातन देवी-देवता के बदले आदि सनातन हिन्दू कह दिया है। आदि सनातन अक्षर भी रखा है। सिर्फ देवता बदली कर हिन्दू रख दिया है। उस समय इस्लामी आये तो उन बाहर वालों ने आकर हिन्दू धर्म नाम रख दिया। पहले हिन्दुस्तान नाम भी नहीं था। तो आदि सनातन हिन्दू देवता धर्म वाले ही समझने चाहिए। वह अक्सर करके धर्मात्मा होते हैं। सभी सनातनी नहीं हैं, जो पीछे आये हैं उनको आदि सनातनी नहीं कहेंगे। हिन्दुओं में भी पीछे आने वाले होंगे। आदि सनातन हिन्दुओं को बताना चाहिए कि तुम्हारा आदि सनातन देवता धर्म था। तुम ही सतोप्रधान आदि सनातन थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बने हो, अब फिर याद की यात्रा से सतोप्रधान बनो। उन्हों को यह दवाई अच्छी लगेगी। बाबा सर्जन है ना। जिन्हों को यह दवाई अच्छी लगती है उनको देनी चाहिए। जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, उन्हों को स्मृति दिलानी चाहिए। जैसे तुम बच्चों को स्मृति आई है। बाबा ने समझाया है–कैसे तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो? अब फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम बच्चे सतोप्रधान बन रहे हो–याद की यात्रा से। जो आदि सनातन हिन्दू होंगे वही असुल देवी-देवता होंगे और वही देवताओं को पूजने वाले भी होंगे। उसमें भी जो शिव के या लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण, सीता-राम आदि देवताओं के भक्त हैं, वह देवता घराने के हैं। अब स्मृति आई है–जो सूर्यवंशी हैं वही चन्द्रवंशी बनते हैं तो ऐसे-ऐसे भक्तों को ढूँढना चाहिए। फॉर्म उनसे भराना है जो समझने लिए आते हैं। मुख्य सेन्टर्स पर फॉर्म भराने के लिए जरूर होने चाहिए। जो भी आये उनको लेसन तो शुरू से देंगे। पहली मुख्य बात है जो बाप को नहीं जानते तो उनको समझाना पड़ता है। तुम अपने बड़े बाप को नहीं जानते हो। तुम असल में पारलौकिक बाप के हो। यहाँ आकर लौकिक के बने हो। तुम अपने पारलौकिक बाप को भूल जाते हो। बेहद का बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। वहाँ यह अनेक धर्म होते नहीं। तो फॉर्म जो भरते उस पर ही सारा मदार होना चाहिए। कोई बच्चे भल समझाते बहुत अच्छा हैं परन्तु योग है नहीं। अशरीरी बन बाप को याद करें, वह है नहीं। याद में ठहर नहीं सकते। भल समझते हैं हम अच्छा समझाते हैं, म्युज़ियम आदि भी खोलते हैं परन्तु याद बहुत कम है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहें, इसमें ही मेहनत है। बाप वारनिंग देते हैं। ऐसे मत समझो कि हम तो बहुत अच्छा कनविन्स कर सकते हैं। परन्तु इससे फायदा क्या? चलो, स्वदर्शन चक्रधारी बन गये परन्तु इसमें तो विदेही बनना है। कर्म करते अपने को आत्मा समझना है। आत्मा इस शरीर द्वारा कर्तव्य करती है–यह याद करना भी नहीं आता, ख्याल में नहीं आता, उनको कहेंगे बुद्धू। बाप को याद नहीं कर सकते! सर्विस करने की ताक़त नहीं। याद बिगर आत्मा में ताक़त कहाँ से आयेगी? बैटरी कैसे भरे? चलते-चलते खड़ी हो जायेगी, ताक़त नहीं रहेगी।

कहा जाता है रिलीज़न इज़ माइट। आत्मा स्वधर्म में टिके, तब ताक़त मिले। बहुत हैं जिनको बाप को याद करना आता नहीं। शक्ल से पता पड़ जाता है। और सब याद आयेगा, बाबा की याद ठहरेगी नहीं। योग से ही बल मिलेगा। याद से बड़ी खुशी और तन्दुरूस्ती रहेगी। फिर दूसरे जन्म में भी शरीर ऐसा तेजस्वी मिलेगा। आत्मा प्योर तो शरीर भी प्योर मिलेगा। कहेंगे यह 24 कैरेट गोल्ड है, तो 24 कैरेट जेवर है। इस समय सब 9 कैरेट बन गये हैं। सतोप्रधान को 24 कैरेट कहेंगे, सतो को 22, यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाप समझाते हैं पहले तो फॉर्म भराना है तो पता पड़े कहाँ तक रेसपॉन्स करते हैं? कितनी धारणा की है? फिर यह भी आता है याद की यात्रा में रहते हैं? तमोप्रधान से सतोप्रधान याद की यात्रा से

बनना है। वह हैं भक्ति की जिस्मानी यात्रायें, यह है रूहानी यात्रा। रूह यात्रा करती है। उसमें रूह और जिस्म दोनों ही यात्रा करते हैं। पतित-पावन बाप को याद करने से ही आत्मा में तेज आता है। कोई जिज्ञासू को जलवा आदि दिखाना है तो बाबा की प्रवेशता भी हो जाती है। माँ-बाप दोनों ही मदद करते हैं–कहीं नॉलेज की, कहीं योग की। बाप तो सदा विदेही है। शरीर का भान है ही नहीं। तो बाप दोनों ताक़त की मदद दे सकते हैं। योग नहीं होगा तो ताक़त मिलेगी कहाँ से? समझा जाता है यह योगी है या ज्ञानी है। योग के लिए दिन-प्रतिदिन नई-नई बातें भी समझाते हैं। आगे थोड़ेही यह समझाते थे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अब बाबा जोर से उठाते हैं, जिससे भाई-बहन का सम्बन्ध भी हट जाए, सिर्फ भाई-भाई की दृष्टि रह जाए। हम आत्मा भाई-भाई हैं। यह बहुत ऊंची दृष्टि है। अन्त तक यह पुरुषार्थ चलना है। जब सतोप्रधान बन जायेंगे तब यह शरीर छोड़ देंगे इसलिए जितना हो सके पुरुषार्थ को बढ़ाना है। बुढ़ों के लिए और ही सहज है। अब हमको वापिस जरूर जाना है। जवानों को कभी ऐसे ख्यालात नहीं आयेंगे। बुढ़े वानप्रस्थी रहते हैं। समझा जाता है अब वापिस जाना है। तो यह सब ज्ञान की बातें समझनी हैं। झाड़ की वृद्धि भी होती रहती है। वृद्धि होते-होते सारा झाड़ तैयार हो जायेगा। कांटों को बदलकर नया छोटा फूलों का झाड़ बनना है। नया बन फिर पुराना होना है। पहले झाड़ छोटा होगा फिर बढ़ता जायेगा। वृद्धि होते-होते पिछाड़ी में कांटे बन जाते हैं। पहले होते हैं फूल। नाम ही है स्वर्ग। फिर बाद में वह खुशबू, वह ताक़त नहीं रहती है। कांटे में खुशबू नहीं होती। हल्के-हल्के फूलों में भी खुशबू नहीं होती। बाप बागवान भी है तो खिवैया भी है, सबकी नाव पार करते हैं। नाव पार कैसे करते हैं, कहाँ ले जाते हैं–यह भी जो सयाने बच्चे हैं, वह समझ सकते हैं। जो समझते नहीं, वह पुरुषार्थ भी नहीं करते। नम्बरवार तो होते हैं ना। कोई-कोई एरोप्लेन तो आवाज़ से भी तीखा जाता है। आत्मा कैसे भागती है–यह भी किसको पता नहीं है। आत्मा तो रॉकेट से भी तीखी जाती है। आत्मा जैसी तीखी और कोई चीज़ होती नहीं। उन रॉकेट आदि में ऐसी कोई चीज़ डालते हैं जो जल्दी उड़ा ले जाते हैं। विनाश के लिए कितना बारूद आदि तैयार करते हैं। स्टीमर, एरोप्लेन में भी बाम्ब्स ले जाते हैं। आजकल पूरी तैयारी रखते हैं। अखबारों में लिखते हैं, ऐसे नहीं कह सकते कि बाम्ब्स काम में नहीं लायेंगे। हो सकता है बाम्ब्स चला दें–ऐसे कहते रहते हैं। यह सब तैयारियां हो रही हैं। विनाश तो जरूर होना है। बाम्ब्स न छूटें, विनाश न हो–ऐसा हो नहीं सकता। तुम्हारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। यह ड्रामा में नूँध है, इसलिए तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। मिरूआ मौत मलूका शिकार..... ड्रामा अनुसार सबको मरना ही है। तुम बच्चों को ड्रामा का ज्ञान होने के कारण तुम हिलते नहीं हो, साक्षी होकर देखते हो। रोने आदि की दरकार नहीं। समय पर शरीर तो छोड़ना ही होता है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम दूसरा जन्म राजाई में लेंगे। मैं राजकुमार बनूँगा। आत्मा को पता है तब तो एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। सर्प में भी आत्मा है ना। कहेंगे हम एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं। कभी तो वह भी शरीर छोड़ेंगे, फिर बच्चा बनेंगे। बच्चे तो पैदा होते हैं ना। पुनर्जन्म तो सबको लेना है। यह सब विचार सागर मंथन करना होता है।

सबसे मुख्य बात है बाप को बहुत प्यार से याद करना है। जैसे बच्चे माँ-बाप को एकदम चटक जाते हैं, वैसे बहुत प्यार से बुद्धियोग द्वारा बाप को एकदम चटक जाना चाहिए। अपने को देखना भी है कि हम कितनी धारणा कर रहे हैं। (नारद का मिसाल) भक्त जब तक ज्ञान न उठायें तब तक देवता बन न सकें। यह सिर्फ लक्ष्मी को वरने की बात नहीं है। यह तो समझने की बात है। तुम बच्चे समझते हो जब हम सतोप्रधान थे तो विश्व पर राज्य करते थे। अब फिर सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करना है। यह मेहनत कल्प-कल्प तुम यथा योग यथा शक्ति करते ही आये हो। हर एक समझ सकते हैं हम कहाँ तक किसको समझा सकते हैं? देह-अभिमान से हम कहाँ तक निकलते जा रहे हैं? मैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ। मैं आत्मा इनसे काम लेती हूँ, यह मेरे आरगन्स हैं। हम सब पार्टधारी हैं। इस ड्रामा में यह बेहद का बड़ा नाटक है। उसमें नम्बरवार सब एक्टर्स हैं। हम समझ सकते हैं–इसमें कौन-कौन मुख्य एक्टर्स हैं। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड ग्रेड कौन-कौन हैं? तुम बच्चे बाप द्वारा ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। रचयिता द्वारा रचना की नॉलेज मिलती है। रचयिता ही आकर अपना और रचना का राज़ समझाते हैं। यह उनका रथ है, जिसमें प्रवेश कर आये हैं। कहेंगे तब तो दो आत्मायें हैं। यह भी कॉमन बात है। पित्र खिलाते हैं, तो आत्मा आती है ना। आगे बहुत आते थे, उनसे पूछते थे। अभी तो तमोप्रधान हो गये हैं। कोई-कोई अब भी बतलाते हैं–हम आगे जन्म में फलाना था। फ्युचर का कोई

नहीं बताते। पिछाड़ी का सुनाते हैं। सब पर तो कोई विश्वास नहीं करते।

बाबा कहते हैं–मीठे बच्चे, अब तुमको शान्त में रहना है। तुम जितना-जितना ज्ञान-योग में मजबूत होंगे तो फिर पक्के सॉलिड हो जायेंगे। अभी तो बहुत बच्चे भोले हैं। भारतवासी देवी-देवतायें कितने सॉलिड थे। धन से भी भरपूर थे। अभी तो खाली हैं। वह सालवेन्ट, तुम इनसालवेन्ट। तुम खुद भी जानते हो भारत क्या था, अब क्या है। भूख मरना ही पड़ेगा। अनाज-पानी आदि कुछ नहीं मिलेगा। कहाँ बाढ़ होती रहेगी, तो कहाँ पानी की बूँद नहीं होगी। इस समय दु:ख के बादल हैं, सतयुग में सुख के बादल हैं। इस खेल को तुम बच्चों ने ही समझा है और किसको भी पता नहीं है। बैज़ पर भी समझाना बहुत अच्छा है। वह लौकिक हद का बाप, यह पारलौकिक बेहद का बाप। यह बाप एक ही बार संगम पर बेहद का वर्सा देते हैं। नई दुनिया बन जाती है। यह है आइरन एज फिर गोल्डन एज जरूर बननी है। तुम अभी संगम पर हो। दिल साफ़ मुराद हासिल। रोज़ अपने से पूछो–खराब काम तो नहीं किया? किसके लिए अन्दर विकारी ख्यालात तो नहीं आये? अपनी मस्ती में रहे या झरमुई-झगमुई में टाइम गँवाया? बाप का फ़रमान है–मामेकम् याद करो। अगर याद नहीं करते तो नाफ़रमानबरदार हो जाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ज्ञान-योग की मस्ती में रहना है, दिल साफ़ रखनी है। झरमुई-झगमुई (व्यर्थ चिंतन) में अपना समय नहीं गँवाना है।

2) हम आत्मा भाई-भाई हैं, अब वापिस घर जाना है–यह अभ्यास पक्का करना है। विदेही बन स्वधर्म में स्थित हो बाप को याद करना है।

वरदान:- अकल्याण के संकल्प को समाप्त कर अपकारियों पर उपकार करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

कोई रोज़ आपकी ग्लानी करे, अकल्याण करे, गाली दे – तो भी उसके प्रति मन में घृणा भाव न आये, अपकारी पर भी उपकार – यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे आप बच्चों ने बाप को 63 जन्म गाली दी फिर भी बाप ने कल्याणकारी दृष्टि से देखा, तो फालो फादर। ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ ही है सर्व के प्रति कल्याण की भावना। अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो।

स्लोगन:- मनमनाभव की स्थिति में स्थित रहो तो औरों के मन के भावों को जान जायेंगे।

पद्मापद्म भाग्यशाली की निशानी

आज भाग्य विधाता बाप सभी भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा भाग्यवान आत्मा है। ब्राह्मण बनना अर्थात् भाग्यवान बनना। भगवान का बनना अर्थात् भाग्यवान बनना। भाग्यवान तो सभी हैं लेकिन बाप के बनने के बाद बाप द्वारा जो भिन्न-भिन्न खजानों का वर्सा प्राप्त होता है, उस श्रेष्ठ वर्से के अधिकार को प्राप्त कर अधिकारी जीवन में चलाना वा प्राप्त हुए अधिकार को सदा सहज विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करना इसमें नम्बरवार बन जाते हैं। कोई भाग्यवान रह जाते, कोई सौभाग्यवान बन जाते। कोई हजार, कोई लाख, कोई पद्मापद्म भाग्यवान बन जाते क्योंकि खजाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि को पाना। चाहे स्वयं को सम्पन्न बनाने के कार्य में लगावें, चाहे स्वयं की सम्पन्नता द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा के कार्य में लगावें। विनाशी धन खर्चने से खुटता है। अविनाशी धन खर्चने से पद्मगुणा बढ़ता है इसलिए कहावत है खर्चो और खाओ। जितना खर्चेंगे, खायेंगे उतना शाहों का शाह बाप और मालामाल बनायेंगे इसलिए जो प्राप्त हुए खजाने के भाग्य को सेवा अर्थ लगाते हैं वह आगे बढ़ते हैं। पद्मापद्म भाग्यवान अर्थात् हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाले और हर संकल्प से वा बोल, कर्म, सम्पर्क से पदमों को पदमगुणा सेवाधारी बन सेवा में लगाने वाले। पद्मापद्म भाग्यवान सदा फ्राकदिल, अविनाशी, अखण्ड महादानी, सर्व प्रति सर्व खजाने देने वाले दाता होंगे। समय वा प्रोग्राम प्रमाण, साधनों प्रमाण सेवाधारी नहीं, अखण्ड महादानी। वाचा नहीं, तो मंसा वा कर्मणा। सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा किसी न किसी विधि द्वारा अखुट अखण्ड खजाने के निरन्तर सेवाधारी। सेवा के भिन्न-भिन्न रूप होंगे लेकिन सेवा का लंगर सदा चलता रहेगा। जैसे निरन्तर योगी हो वैसे निरन्तर सेवाधारी। निरन्तर सेवाधारी सेवा का श्रेष्ठ फल निरन्तर खाते और खिलाते रहते अर्थात् स्वयं ही सदा का फल खाते हुए प्रत्यक्ष स्वरूप बन जाते हैं।

पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा सदा पदम आसन निवासी अर्थात् कमल पुष्प स्थिति के आसन निवासी हद के आकर्षण और हद के फल को स्वीकार करने से न्यारे और बाप तथा ब्राह्मण परिवार के, विश्व के प्यारे। ऐसी श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मा को सर्व आत्मायें सदा दिल के स्नेह के खुशी के पुष्प चढ़ाते हैं। स्वयं बापदादा भी ऐसे निरन्तर सेवाधारी पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा प्रति स्नेह के पुष्प चढ़ाते हैं। पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा सदा अपने चमकते हुए भाग्य के सितारे द्वारा अन्य आत्माओं को भी भाग्यवान बनाने की रोशनी देते। बापदादा ऐसे भाग्यवान बच्चों को देख रहे थे। चाहे दूर हैं, चाहे सन्मुख हैं लेकिन सदा बाप को दिल में समाये हुए हैं इसलिए समान सो समीप रहते। अब अपने आपसे पूछो मैं कौन-सा भाग्यवान हूँ। अपने आपको तो जान सकते हैं ना। दूसरे के कहने से मानो वा न मानो लेकिन स्वयं को सब जानते हैं कि मैं कौन हूँ! समझा। फिर भी बापदादा कहते हैं भाग्यहीन से भाग्यवान तो बन गये। अनेक प्रकार के दु:ख-दर्द से तो बचेंगे। स्वर्ग के मालिक तो बनेंगे। एक है स्वर्ग में आना। दूसरा है राज्य अधिकारी बनना। आने वाले तो सब हो लेकिन कब और कहाँ आयेंगे, यह स्वयं से पूछो। बापदादा के रजिस्टर में स्वर्ग में आने की लिस्ट में नाम आ गया। दुनिया से तो यह अच्छा है। लेकिन अच्छे से अच्छा नहीं है। तो क्या करेंगे? कौन-सा ज़ोन नम्बरवन आयेगा। हर ज़ोन की विशेषता अपनी-अपनी है।

महाराष्ट्र की विशेषता क्या है? जानते हो? महान तो है ही लेकिन विशेष विशेषता क्या गाई जाती है! महाराष्ट्र में गणपति की पूजा ज्यादा होती है। गणपति को क्या कहते हैं? विघ्न-विनाशक। जो भी कार्य आरम्भ करते हैं तो पहले गणेशाए नम: कहते हैं। तो महाराष्ट्र वाले क्या करेंगे? हर महान कार्य में श्री गणेश करेंगे ना। महाराष्ट्र अर्थात् सदा विघ्न-विनाशक राष्ट्र। तो सदा विघ्न-विनाशक बन स्वयं और अन्य के प्रति इसी महानता को दिखायेंगे! महाराष्ट्र में विघ्न नहीं होना चाहिए। सब विघ्न-विनाशक हो जाएं। आया और दूर से नमस्कार किया। तो ऐसा विघ्न-विनाशक ग्रुप लाया है ना! महाराष्ट्र को सदा अपनी इस महानता को विश्व के आगे दिखाना है। विघ्न से डरने वाले तो नहीं हो ना। विघ्न-विनाशक चैलेंज करने वाले हैं। वैसे भी महाराष्ट्र में बहादुरी दिखाते हैं। अच्छा!

यू.पी. वाले क्या कमाल दिखायेंगे? यू.पी. की विशेषता क्या है? तीर्थ भी बहुत हैं, नदियॉ भी बहुत हैं, जगतगुरू भी वहाँ ही हैं। चार कोने में चार जगतगुरू हैं ना। महामण्डलेश्वर यू.पी. में ज्यादा हैं। हरि का द्वार यू.पी. का विशेष है। तो हरि का द्वार अर्थात् हरि के पास जाने का द्वार बताने वाले सेवाधारी यू.पी. में ज्यादा होने चाहिए। जैसे तीर्थ स्थान के कारण यू.पी. में पण्डे बहुत हैं। वह तो खाने-पीने वाले हैं लेकिन यह है सच्चा रास्ता बताने वाले रूहानी सेवाधारी पण्डे। जो बाप से

मिलन मनाने वाले हैं। बाप के समीप लाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव सो पण्डे यू.पी. में विशेष हैं? यू.पी. को यह विशेष पाण्डव सो पण्डे का प्रत्यक्ष रूप दिखाना है। समझा!

मैसूर की विशेषता क्या है? वहाँ चन्दन भी है और विशेष गार्डन भी है। तो कर्नाटक वालों को विशेष सदा रूहानी गुलाब, सदा खुशबूदार चन्दन बन विश्व में चन्दन की खुशबू कहो अथवा रूहानी गुलाब की खुशबू कहो, विश्व को गार्डन बनाना है और विश्व में चन्दन की खुशबू फैलानी है। चन्दन का तिलक दे खुशबूदार और शीतल बनाना है। चन्दन शीतल भी होता है। तो सबसे ज्यादा रूहानी गुलाब कर्नाटक से निकलेंगे ना। यह प्रत्यक्ष प्रमाण लाना है।

अभी सबको अपनी-अपनी विशेषता का प्रत्यक्ष रूप दिखाना है। सबसे खिले हुए खुशबूदार रूहानी गुलाब लाने पड़ें। लाये भी हैं, कुछ-कुछ लाये हैं लेकिन गुलदस्ता नहीं लाया है। अच्छा!

विदेश की महिमा तो बहुत सुनाई है। विदेश की विशेषता है – डिटैच भी बहुत जोर से होंगे तो अटैच भी जोर से होंगे। बापदादा विदेशी बच्चों का न्यारा और प्यारापन देख हर्षित होते हैं। वह जीवन तो बीत गई। जितना फँसे हुए थे उतने ही अब न्यारे भी हो गये इसलिए विदेश का न्यारा और प्यारापन बापदादा को भी प्यारा लगता है इसलिए विशेष बापदादा भी यादप्यार दे रहे हैं। अपनी विशेषता में समा गये हो! ऐसे न्यारे और प्यारे हो ना। अटैचमेन्ट तो नहीं है ना। फिर भी देखो विदेशी मेहमान होकर घर में आये हैं तो मेहमानों को सदा आगे किया जाता है इसलिए भारतवासियों को विदेशियों को देख विशेष खुशी होती है। कई ऐसे गेस्ट होते जो होस्ट बन बैठ जाते हैं। विदेशियों की सदा यही चाल रही है। गेस्ट बन आते और होस्ट बन बैठ जाते। फिर भी अनेक दीवारों को तोड़कर बाप के पास सो आपके पास आये हैं। तो "पहले आप" तो कहेंगे ना। ऐसे तो भारत की विशेषता अपनी, विदेश की अपनी है। अच्छा!

सभी पदम आसनधारी पद्मापद्म भाग्यवान, सदा हर सेकण्ड, हर संकल्प में निरन्तर 84 घण्टों वाली देवियाँ मशहूर हैं। तो अभी 84 में घण्टा बजायेंगे वा और भी अभी इन्तजार करें! विदेश में तो डर से जी रहे हैं। तो कब घण्टे बजायेंगे। विदेश बजावे वा देश बजावे। 84 माना चारों ओर के घण्टे बजें। जब समाप्ति में आरती करते हैं तो जोर-जोर से घण्टे बजाते हैं ना तब समाप्ति होती है। आरती का होना माना समाप्ति होना। तो अब क्या करेंगे?

सभी पदम-आसनधारी, पद्मापद्म भाग्यवान, सदा हर सेकेण्ड, हर संकल्प में निरन्तर सेवाधारी, सदा फ्राकदिल बन सर्व खजानों को देने वाले, मास्टर दाता, सदा स्वयं की सम्पन्नता द्वारा औरों को भी सम्पन्न बनाने वाले, श्रेष्ठ भाग्य अधिकारी, सदा श्रेष्ठ सबूत देने वाले सपूत बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पंजाब निवासियों प्रति:- बाप बैठा है इसलिए सोचने की जरूरत नहीं है, जो होगा वह कल्याणकारी है। आप तो सबके हो। न हिन्दू हो, न सिक्ख हो। बाप के हो तो सबके हो। पाकिस्तान में भी यही कहते थे ना – आप तो अल्लाह के बन्दे हो, आपको किसी बात से कनेक्शन नहीं इसलिए आप ईश्वर के हो, और किसी के नहीं। क्या भी हो लेकिन डरने वाले नहीं। कितनी भी आग लगे बिल्ली के पूँगरे तो सेफ रहेंगे लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेफ रहेंगे। ऐसे नहीं, कहे मैं बाप की हूँ और याद करे दूसरों को। ऐसे को मदद नहीं मिलेगी। डरो नहीं, घबराओ नहीं, आगे बढो। याद की यात्रा में, धारणाओं में, पढ़ाई में सब सबजेक्ट से आगे बढ़ो। जितना आगे बढेंगे उतना सहज ही प्राप्ति करते रहेंगे।

2. सभी अपने को इस सृष्टि ड्रामा के अन्दर विशेष पार्टधारी समझते हो? कल्प पहले वाले अपने चित्र अभी देख रहे हो! यही ब्राह्मण जीवन का वन्डर है। सदा इसी विशेषता को याद करो कि क्या थे और क्या बन गये। कौड़ी से हीरे तुल्य बन गये। दु:खी संसार से सुखी संसार में आ गये। आप सब इस ड्रामा के हीरो हीरोइन एक्टर हो। एक-एक ब्रह्माकुमार कुमारी बाप का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी हो। भगवान का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी कितने श्रेष्ठ हुए! तो सदा इसी कार्य के निमित्त अवतरित हुए हैं। ऊपर से नीचे आये हैं यह सन्देश देने – यही स्मृति खुशी दिलाने वाली है। बस अपना यही आक्यूपेशन सदा याद रखो कि खुशियों की खान के मालिक हैं। यही आपका टाइटिल है।

3. सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें अनुभव करते हो? सच्चे ब्राह्मण अर्थात् सदा सत्य बाप का परिचय देने वाले। ब्राह्मणों का काम है कथा करना, तुम कथा नहीं करते लेकिन सत्य परिचय सुनाते हो। ऐसे सत्य बाप का सत्य

परिचय देने वाले, ब्राह्मण आत्मायें हैं, यही नशा रहे। ब्राह्मण देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं इसलिए ब्राह्मणों का स्थान चोटी पर दिखाते हैं। चोटी वाले ब्राह्मण अर्थात् ऊंची स्थिति में रहने वाले। ऊंचा रहने से नीचे सब छोटे होंगे। कोई भी बात बड़ी नहीं लगेगी। ऊपर बैठकर नीचे की चीज़ देखो तो छोटी लगेगी। कभी कोई समस्या बड़ी लगती तो उसका कारण नीचे बैठकर देखते हो। ऊपर से देखो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तो सदा याद रखना चोटी वाले ब्राह्मण हैं – इसमें बड़ी समस्या भी सेकण्ड में छोटी हो जायेगी। समस्या से घबराने वाले नहीं लेकिन पार करने वाले समस्या का समाधान करने वाले। अच्छा।

आज सवेरे (18-4-84) अमृतवेले एक भाई ने हार्टफेल होने से अपना पुराना शरीर मधुबन में छोड़ा उस समय अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए महावाक्य

सभी ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! कोई भी सीन जो भी ड्रामा में होती है उसको कहेंगे कल्याणकारी। नथिंग न्यू। (उनकी लौकिक भाभी से) क्या सोच रही हो? साक्षीपन की सीट पर बैठ सब दृश्य देखने से अपना भी कल्याण है और उस आत्मा का भी कल्याण है। यह तो समझती हो ना! याद में शक्ति रूप हो ना। शक्ति सदा विजयी होती है। विजयी शक्ति रूप बन सारा पार्ट बजाने वाली। यह भी पार्ट है। पार्ट बजाते हुए कभी भी और कोई संकल्प नहीं करना। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। अभी उस आत्मा को शान्ति और शक्ति का सहयोग दो। इतने सारे दैवी परिवार का सहयोग प्राप्त हो रहा है इसलिए कोई सोचने की बात नहीं है। महान तीर्थ स्थान है ना! महान आत्मा है, महान तीर्थ है। सदा महानता ही सोचो। सभी याद में बैठे हो ना! एक लाडला बच्चा, अपने इस पुराने शरीर का हिसाब पूरा कर अपने नये शरीर की तैयारी में चला इसलिए अभी सभी उस भाग्यवान आत्मा को शान्ति, शक्ति का सहयोग दो। यही विशेष सेवा है। क्यों, क्या में नहीं जाना लेकिन स्वयं भी शक्ति स्वरूप हो, विश्व में शान्ति की किरणें फैलाओ। श्रेष्ठ आत्मा है, कमाई करने वाली आत्मा है इसलिए कोई सोचने की बात नहीं। समझा!

वरदान:- फरिश्ते स्वरूप की स्मृति द्वारा बाप की छत्रछाया का अनुभव करने वाले विघ्न जीत भव

अमृतवेले उठते ही स्मृति में लाओ कि मैं फरिश्ता हूँ। ब्रह्मा बाप को यही दिलपसन्द गिफ्ट दो तो रोज़ अमृतवेले बापदादा आपको अपनी बांहों में समा लेंगे, अनुभव करेंगे कि बाबा की बाहों में, अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हैं। जो फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहेंगे उनके सामने कोई परिस्थिति वा विघ्न आयेगा भी तो बाप उनके लिए छत्रछाया बन जायेंगे। तो बाप की छत्रछाया वा प्यार का अनुभव करते विघ्न जीत बनो।

स्लोगन:- सुख स्वरूप आत्मा स्व-स्थिति से परिस्थिति पर सहज विजय प्राप्त कर लेती है।